‘पूर्वजन्म अनुभूति शिविर सम्पन्न’’

दिल्ली। 16 अगस्त, 2015। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के आज्ञानुवर्ती प्रेक्षाप्राध्यापक मुनिश्रीकिशनलालजी के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान पूर्वजन्म अनुभूति शिविर में सानन्द सम्पन्न हुआ। समापन समारोह में शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी के सहायक निदेशक एवं शिविर संचालक श्री हनुमानमल शर्मा ने बताया कि शिविर में देश के विभिन्न राज्यों से पच्चीस भाईयों ने भाग लेकर पूर्व जन्म अनुभूति के प्रयोग किये। कार्यक्रम का प्रारंभ प्रेक्षाध्यान गीत के सामूहिक संगान से हुआ।

अपने उद्‌बोधन में शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए प्रेक्षाप्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने कहा कि सभी के लिए पूर्वजन्म अनुभूति संभव नहीं हो पाई परंतु अधिकतम भाईयों को अपने पूर्वजन्मों का कुछ न कुछ अनुभव जरूर हुआ है। परंतु प्रयास सभी ने किया यह सकारात्मक बात है। ध्यान की गहराई में सभी ने प्रवेश पाया। यह महत्त्वपूर्ण सच्चाई है।

अपने जीवन में साधना के क्रम को अपनाकर हम कर्मों के बंधन से बच सकते हैं। जाति स्मृति अर्थात पूर्वजन्म अनुभूति का यह प्रयोग भगवान महावीर की देन है। उनकी उपासना में उपस्थित होने वालों से भगवान पूछते तुम कौन हो? कहां से आये हो? उपर से आये हो या नीचे से आये हो? पूर्व से आये हो या पश्चिम से आये हो? यह प्रश्न सुनकर व्यक्ति चिंतन में डूब जाता और जातिस्मृति को प्राप्त हो जाता। भगवान महावीर ने घोषणा की आत्मा है, आत्मा थी और आत्मा रहेगी। इस प्रयोग से जीवन के रूपान्तरण करने का अवसर मिला।

इस अवसर पर सर्वश्री प्रदीप वेणरेकर, धीरज यादव, राजेश जैन, पुलकीत जैन, सुनील भडाना, पी.सी. जैन, सोहम सचदेव, कमलसिंह पटावरी और ब्रह्मचारी ऋषि अभिषेक जाबाली ने शिविर में हुए पूर्व जन्म अनुभूति के संस्मरण सुनाये। शिविर प्रशिक्षण में मुनिश्री किशनलालजी, मुनि नीरजकुमारजी एवं हनुमानमल शर्मा का सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर व्यवस्थाओं में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली के पदाधिकारी एवं कार्यकर्त्ताओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। शिविरार्थियों ने अपने अनुभव में शिविर स्थल की साताकारी व्यवस्था की भूरी-भूरी प्रशंसा की। सभी के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए प्रवास व्यवस्था समिति के सहसंयोजक श्री मनोज खटेड़ ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि यहां सीखे हुए प्रयोगों की निरंतरता बनाए रखें और अपनी साधना के क्रम को आगे बढ़ाते रहें।

प्रेषक : अशोक सियोल
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली

अभिवन सामायिक दिवस

कर्म निर्जरा का सशक्त साधन है सामायिक : मुनि किशनलाल

दिल्ली। 16 अगस्त, 2015। प्रेक्षाप्रापध्यापक 'शासनश्री' मुनिश्री किशनलालजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन के अनुकम्पा परिसर में तेरापंथ युकव परिषद्, दिल्ली द्वारा आयोजित 'अभिनव सामायिक' कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद के कार्यकर्त्ताओं के साथ पूर्वजन्म अनुभूति शिविर के शिविरार्थियों ने भी भाग लिया। इस अवसर पर सामायिक के विभिन्न चरणों – सामायिक पाठ, जप–योग, ध्यान–योग, स्वाध्याय एवं त्रिगुप्ति साधन का प्रयोग किया। मुनिश्री ने सामायिक के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए इसके आध्यात्मिक महत्त्व को समझाया। सामायिक के अनुष्ठान में 15 व्यक्ति अजैन थे। कुछ दिगम्बर साधक थे। उन्होंने पहली बार अभिनव सामायिक का अनुष्ठान किया। बहुत ही शांति और समता का अनुभव हुआ।

कार्यक्रम में मुनिश्री निकुंजकुमारजी ने सामायिक से होने वाले लाभों की चर्चा करते हुए कहा कि जिस प्रकार एक चार्टेड एकाउंटेट सालभर के बहीखातों की जांच कर त्रुटियां दूर करता है उसी प्रकार जागरूक श्रावक अपने प्रतिदिन के पापों की आलोचना कर कर्मबंधन से मुक्त रह सकता है।

मुनिश्री नीरजकुमारजी सुमधुर स्वरों में 'महीमा सामायिक की गाई प्रभु महावीर ने' गीतिका प्रस्तुत की।

प्रेषक : अशोक सियोल
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली